चतुर चतुरभुज

एवं

गीत सप्तदशी

सम्पादक

डा० श्री शैलेन्द्र मोहन झा

एम० ए० (द्वय) पी-एच० डी०; डी० लिट्०

च० मिथिला कालेज, दरभंगा

प्रकाशक

मिथिला प्रकाशन

लहेरियासराय।

चतुर चतुरभुज

एवं

गीत सप्तदशी

सम्पादक

डा० श्रीशैलेन्द्र मोहन झा

एम० ए० (द्वय); पी-एच० डी०; डी० लिट्०

च० मिथिला कालेज, दरभंगा

प्रकाशक

मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय

प्रथम संस्करण—१९६९ ई०

मूल्य—पाँच टाका

प्रकाशक

मिथिला प्रकाशन लहेरियासराय

मुद्रक

नव भारत प्रेस, लहेरियासराय।

निवेदन

मैथिली-साहित्यक संरक्षण मे नेपालक महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। मैथिलीक प्रचुर साहित्य एहि ठामक पुस्तकालय सभक मध्य अनुरक्षित अछि। एहि सभक प्रकाशन भेने मैथिलीक श्री-सम्पन्नताक विशद परिचय भेटत। प्रस्तुत काव्य-संकलन ताहि दिशा मे कैल गेल एकटा लघु प्रयास थीक। तथापि एहि सँ मैथिलीक अनुसन्धित्सु लोकनि केँ अवश्ये प्रेरणा भेटतन्हि।

चतुरभुजक उल्लेख मैथिली-साहित्यक इतिहास मध्य त अवश्य होइत छल मुदा हुनक काव्य सुषमाक वास्तविक परिचय सँ हमरा लोकनि सर्वथा अनभिज्ञ छलहुँ। ई जे थोड़ पद हुनक प्रकाशित कैल जाइछ ताहि सँ हुनक प्रतिभा ओ पाण्डित्य पर बहुत किछु प्रकाश पड़ैछ। एहन सम्पन्न ओ सुरुचिपूर्ण कलाकार निश्चय बड़ बेशी रचना कैने हैताह।

चतुरभुजक एहि गीत सभक मूल स्रोत 'भाषा-गीत-संग्रह' ओ 'राग-भजन-संग्रह' नामक पाण्डुलिपि अछि। ई दुनू हस्तलेख नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयक अमूल्य निधि थीक। ई त अभिलेखालयक अधिकारी लोकनिक कृपा थीक जे ओ एकरा पढ़बाक ओ उतारबाक सुविधा देलन्हि। वस्तुतः धन्यवादक सामान्य उपचार द्वारा हुनकालोकनिक कृतज्ञतापाश सँ मुक्त नहि भेल जा सकैछ।

चतुरभुजक गीतक भाव-ऐश्वर्य सर्वसाधारणक लेल सुलभ हो अतः एकर अर्थ सेहो दऽ देल अछि। एकर अर्थानुसन्धान मे

प्रो० रामदेव झा जीक यथेष्ठ सहयोग रहल अछि। हुनक ई अकृ-त्रिम शुभाकांक्षा कोनो धन्यवादक अपेक्षा नहि रखैछ।

एहि लघु ग्रन्थक प्रकाशनक श्रेय लहेरियासरायक मिथिला-प्रकाशन कें छैक। एकर सूत्रधार श्री सूर्यनारायण झा मातृ-भाषाक प्रबल अनुरागी छथि जनिक अशेष उत्साह एहि व्यावसायिक संस्था कें वस्तुतः साहित्यक संस्थानक रूप दऽ देलक अछि।

तहिना पुस्तकक प्रकाशन मे नव भारत प्रेस, लहेरियासरायक अधिकारी जे तत्परता ओ मनोयोग देखौलन्हि अछि से प्रशंसनीय अछि।

लहेरियासराय

श्री शैलेन्द्र मोहन झा।
(सम्पादक)

सूची-पत्र

चतुर चतुरभुज

मैथिली साहित्यक इतिहासमे 'चतुर चतुरभुज'क उल्लेख विद्यापतिक समसामयिक कवि समूहक अन्तर्गत कैल गेल अछि[१]। मुदा एहि कालनिर्धारणक लेल कोनो युक्तिक आधार नहि उपलब्ध होइछ। वस्तुतः हिनक जे दूटा मात्र पद प्रकाशित ओ प्रचलित छल[२] ताहिमे, कोनो आश्रयदाताक ने त नामे अछि आ ने कोनो आने प्रकारक संकेत, जाहिसँ हिनक विद्यापतियुगीन हैबाक पुष्टि हो। तथापि एम्हर आबि हिनक जे थोड़-बहुत नव पद प्राप्त भेल अछि[३] तकरा अवलम्बन कय एहि दिशामे पुनः प्रयास कैल जा सकैछ। ई जे नव पद सभ अछि ताहिमे अधिकांशक प्राप्य स्रोत

---

१ द्रष्टव्य, डा० जयकान्त मिश्र, ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, जिल्द—१ [प्रयाग—१९४९], पृष्ठ—२२१।

२ एहि मे सँ एकटा पदक आधार स्रोत लोचन कृत 'रागतरंगिणी' अछि आ दोसर पद केँ डा० ग्रियर्सन लोककंठ सँ सूनि अपन 'ट्वेन्टी वन वैष्णव हिम्स' नामक ग्रन्थमे संकलित कैने छलाह।

३ ई समस्त पद प्रस्तुत ग्रन्थ मे संकलित भेल अछि।

नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे अनुरक्षित जो पाण्डुलिपि अछि जकर नामकरण 'भाषा-गीत-संग्रह' कहि कैल गेल अछि[४] । ई

---

४ 'भाषा-गीत-संग्रह, क ई पाण्डुलिपि प्रारम्भमे नेपालक राजगुरु हेमराज शर्माक निजो पुस्तकालयमे छल । पश्चात् राजगुरुक पुस्तकालय, नेपालक राष्ट्रीय पुस्तकालय केँ प्रदान कऽ देल गेल । पुनः ओतय सँ अन्य पाण्डुलिपिक सङ्ग-सङ्ग उपर्युक्त भाषा-गीत-संग्रहोक पाण्डुलिपि, नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालय मे हस्तान्तरित कऽ देल गेल अछि। सम्प्रति ई पाण्डुलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय मे अछि (भा० गी० सं०, पाण्डुलिपि, राष्ट्रीय पु० क्रमाङ्क—६९६१ ।)

डा० जयकान्त मिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहास मे 'कंसनारायण-पदावली' नामक [नेपाली कागत पर] एकटा हस्तलेखक निर्देश कैने छथि [द्रष्टव्य- पृ० १९५]। एहि हस्तलेख केँ ओ राजगुरु हेमराज शर्माक पुस्तकालयमे देखने छलाह । एहि पाण्डुलिपिक प्रसंग ओ लिखैत छथि जे "एहिमे ने त संकलन कर्त्ताक नामे भेटैछ आ ने संकलन कालेक कोनो सूचना । पाण्डुलिपि स्वच्छ ओ सुन्दर तिरहुतामे अछि जे दू सै वर्ष पूर्वक लिखल प्रतीत होइछ ।" डा० मिश्र एहि हस्तलेखक जे विवरण देने छथि तथा ओहि ग्रन्थ सँ जे पदक उद्धरण ओ पद संख्या देने छथि से सभटा उपर्युक्त 'भाषा-गीत-संग्रह' सँ समता रखैत अछि । सम्भव जे जयकान्त बाबू एही सँग्रह केँ देखने होथि जकरा ओ 'कंसनारायण-पदावली' नामे अभिहित कैलन्हि । ग्रन्थक अनुशीलनसँ एहि नामकरणक सार्थकता नहि प्रतिपादित होइछ । एहिमे मिथिलाक अन्तिम ओइनवार नरेश लक्ष्मीनाथ—कंसनारायण [१४९६-१५२७] रचित कतिपय पद •[लक्ष्मीनाथ ओ कंसनारायण, दुन्नू भणिता सँ] सँकलित भेटैछ मुदा ताहि सँ कतेको वेशी पद विद्यापति एवं अन्य कविलोकनि छन्हि । एतेक धरि जे नेपालनरेश सिद्धि नरसिंहोक [१६२०-१६६१] अनेक पद एहिमे अछि आ' ओ त निश्चित

अवश्य जे एक सै छेयालिस पदक एहि संग्रहमे विद्यापति ओ हुनक समसामयिक एवं परवर्ती बहुतो कविक रचनाक संग-संग

रूपेँ कंसनारायणक पश्चात् भेलाह । तखन फेर एकर नामकरण 'कंस-नारायण पदावली' किऐक ? भऽ सकैछ जे एहि संग्रहक अन्तिम पदमे कंसनारायणक नाम देखि जयकान्त बाबू एहि समस्त पदावली केँ 'कंस-नारायण-पदावली'क नाम देबाक लेल प्रेरित भेल होथि । ई अन्तिम पद गोविन्द कवि रचित अछि जाहिमे प्रत्येक पद खण्डक संस्कृत रूपान्तर सेहो देल गेल अछि । शेष चारि पंक्ति एहि रूपें अछि

धनि धैरज कर गोविन्द भास ।
सायर सयन तुसार तरास ॥
कंसनारायण भूपति जान ।
सोरमपति अति गुनक निधान ॥

धैर्यं कुरु प्रेयसि माधवस्य का शीत-भीतिः स्वप्नतः समुद्रे ।
श्री कंसनारायण भूमिभर्त्ता वेतास्य गोविन्द सुभाषितस्य ॥

तथापि एहि नामकरणक दोसरो हेतु भऽ सकैछ । जयकान्त बाबू अपन इतिहास मे 'भाषा-गीत-सॅग्रह' नामक दू गोट आ'रो ग्रन्थक सूचना देने छथि [द्रष्टव्य, पृ० १९५] । एहि प्रकारक संकलनक लेल 'भाषा-गीत-संग्रह' एकटा सामान्य नाम भेल । मुदा जयकान्त बाबूक पदावली हुनक नव अन्वेषण छलन्हि और एही कारणें जं उपरिलिखित 'भाषा-गीत-संग्रह'क दुनू पाण्डुलिपि सँ एकर पृथक अस्तित्व बोध करेबाक लेल एहि नव नामकरणक कल्पना कैने होथि त अत्युक्ति नहि हैत । जे हो, एहि नामकरणक सार्थकता सर्वदा चिन्तनीय रहत ।

चतुर च भु जीक पद संकलित भेटैछ[५] मुदा एतबहि सँ चतुर्भुज केँ विद्यापतिकालीन मानि लेबाक समुचित हेतु नहि प्रतीत होइछ। एतेक अवश्य जे बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त स्वसम्पादित 'विद्यापति-पदावली' मे एकटा एहन पद उद्धृत कैने छथि जकर भणितामे विद्यापतिक संगहि 'चतुरचतुरभुजो'क नाम अछि[६]। परन्तु इयह पद उपयुक्त 'भाषा-गीतसंग्रह' मे केवल विद्यापतिक भणिता सँ मालव रागक निर्देश पूर्वक उदाहृत अछि[७]। वस्तुतः चतुर्भुजक काल निर्धारणक क्रममे 'भाषा-गीत संग्रहक'क संकलनक समयक प्रसंगमे विचार करब अपेक्षित अछि। एहि पाण्डुलिपि मे अन्य कविक रचनाक अतिरिक्त नेपाल नरेश सिद्धि नरसिंह मल्लक अनेक पद संकलित भेल

---

५ एहि ग्रन्थमे विद्यापति (६८), चतुर चतुरभुज (१२), गोविन्द (१२), सिद्धि नरसिंह (७), नृपसिंह (१), सिंह नृपति (४), दशावधान (५), लखिमीनाथ (२), कंसनारायण (१), भिखारी मिश्र-कविराज (२), काशिनाथ (१) कवि कुमुदी (१) भरतकवि (१), वीरनारायण (१), यशोधर (१), गजसिंह (१) गोपीनाथ (१) अमियकर (१), सदानन्द (१), भीष्म (१), नव कविराअ (१) मल्लदेव (१) भगीरथ (१) राजनन्दन (१), भवेश (१), रामनाथ (१) आदि विभिन्न कविक पद संकलित भेल अछि तथा १५ टा आरो पद अछि जकर रचनाकारक संकेत नहि प्राप्त होइछ।

६ भनइ विद्यापति सुन वरनारि।
चतुर चतरभुज मिलित मुरारि॥
—न० गु०, प्रहेलिका—२०।

७ भनइ विद्यापति एहु रस जान।
राए सिवसिंह लखिमा देइ रमान॥
—भा० गीत सं०, पद संख्या—५२

अछि। सिद्धि नरसिंहक मल्लक एकटा पदमे भणिताक पंक्ति नहि अछि। मुदा पदक नीचामे 'श्री सिद्धि नरसिंह मल्ल देवानाम्' लिखि रचनाकारक स्पष्टतः उल्लेख कऽ देल गेल अछि[८]। एतय 'श्री' शब्द युक्त रहने आभासित होइछ जे पद संकलनक समयमे महाराज सिद्धि नरसिंह मल्ल जीवित छलाह। अतः प्रस्तुत संकलन असंदिग्ध रूपेँ हुनक जीवनकालक प्रमाणित होइछ। सिद्धि नरसिंह मल्लक समय १६२० ई० सँ १६५१ ई० धरि छल[९]। एहि तरहेँ प्रस्तुत संग्रह विद्यापति [१३६०—१४६०]क दू सै वर्षक पश्चात्‌क प्रतीत होइछ। तखन खाली विद्यापति ओ हुनक अन्य सम-सामयिक कवि समूहमे चतुर्भुजोक रचना देखि हुनका विद्यापतिक समयुगीन मानबाक सुदृढ़ आधार नहि भेटैत अछि। तथापि चतुर्भुज अवश्ये १६५० ई० सँ पहिनहि भेल हैताह कारण जे लोचन अपन ग्रन्थ 'रागतरंगिणीमे' हिनक एकटा पद उद्धृत कैने छथि।

ओना त चतुर्भुज अपन पद सभमे कोनो परिचित पोषक केर नामोल्लेख नहि कैने छथि मुदा 'भाषा-गीत-संग्रह'मे जे एकटा 'लगनी' अछि ताहिमे 'कृष्णचरण' नाम आयल अछि।[१०] ई 'कृष्णचरण' निस्सन्देह व्यक्तिक नाम थीक जे कविक शब्दमे 'गुणसागर, त्रिभुवन आगर ओ रसविदग्ध नागर छथि।' ई 'कृष्ण-चरण, नाम विद्यापतिक कोनो पदमे नहि भेटल अछि आ' ने ओइ-नवार राजन्य वर्गमे एहि नामक कोनो व्यक्तिक कतहु उल्लेख अछि।

---

८ द्रष्टव्य, भाषा-गीत-संग्रह, पद संख्या—२६।

९ द्रष्टव्य, डी० आर० रेग्मी, मेडिएभल नेपाल [कलकत्ता—१९५५] खण्ड—२, पृष्ठ—२६८

१० चतुर चतुरभुज गाओल रस बुझ नागर रे।
कृष्णचरण गुन सागर त्रिभुवन आगर रे॥
—भा० गी० सं०, पद संख्या १३२।

तखन एतेक अवश्य जे एहि 'कृष्णचरण'क नामाङ्कन अमृतकर रचित एकटा पदमे प्राप्त होइछ।[११] अमृतकरक ई पद 'भाषा-गीत-संग्रह'मे संकलित हुनक 'रत्नावली-नाटिका'क एकटा गीत थीक। एहिमे 'कृष्णचरण'केँ गुणक निधान कहि हुनक रसज्ञताक संकेत कैल गेल अछि। ई 'कृष्णचरण'के छलाह ? भऽ सकैछ जे राज-परिवारसँ सम्बद्ध कोनो अल्प प्रसिद्ध व्यक्ति होथि। मुदा एहि 'कृष्णचरण' नामक उल्लेख 'चतुर चतुरभुज' ओ 'अमृतकर' दुनू कविक पदमे रहने, दुनुक समसामयिकताक सम्भावना बढ़ि जाइछ। अमृतकरके महाराज शिवसिंहक मन्त्री कहल गेल अछि। हिनक उपलब्ध पद सभ मे सँ एकटामे महाराज शिवसिंहक तथा एकटामे महाराज भैरव

---

११ पद एहि प्रकारेँ अछि—

चित्र लिखिअ अनुमाने।
हमराहु नगर पुजिअ पँचवाने॥
बड़ कौतुक एहि ठामे।
परतष भए पूजा लेथि कामे॥
नमो नमो कुसुम सरे।
हमहु पूजओ देहे अभयवरे॥
दइए पठइलिहुँ ताते ँ।
एहि नगरी के न बुझिअ बाते॥
पुहविहिँ अछए सगरीँ।
एहि सन न देखिअ दोसरि नगरी॥
सुकवि अमिअकर भाने।
कृष्णचरण बुझ गुनक निधाने॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या—६३।

सिंहक नाम पाओल जाइछ।[१२] अथ च, शिवसिंहसँ भैरवसिंहक काल पर्यन्त अमृतकरक अवस्थिति अनुमोदित होइछ। एहि आधार पर चतुर्भुजोक इयह समय निर्धारित कैल जा सकैछ। अमृतकर ओ महाकवि विद्यापतिक समसामयिकता इतिहाससँ प्रमाणित अछि। फेर एहि स्थितिमे चतुर्भुज ओ विद्यापति दुनूकेँ एकहि कालक मानब असंगत नहि हैत।

एहि दिशामे औरहु जे उपलब्ध साधन अछि ताहू पर विचार कऽ लेब युक्ति संगत प्रतीत होइछ। 'भाषा-गीत-संग्रह'मे चतुर्भुज रचित एकटा पदक भणिता एहि प्रकारेँ भेटैछ—

मदन महासिधि वर तनु रे से चतुरभुज गाव।
तेजल सिवासिव जे तनु रे से दरसन पाव॥

इयह पद नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे संरक्षित 'राग-भजन संग्रह' नामक एकटा दोसरो पाण्डुलिपिमे उल्लिखित भेटैछ। मुदा एहि संग्रहक भणिता बला अन्तिम दुनू पंक्ति भिन्ने प्रकारक अछि—

सिझल सितासित से पए तसु दरसन पाव।
भनइ चतुरभुज बूझय रे नृप जगजोति भाव॥

एहिमे नेपाल नरेश जगज्ज्योतिर्मल्ल एवं चतुर्भुज, दुनूक नाम देखि दुनूक समसामयिकताक शंका उत्पन्न होएब स्वाभाविक अछि। जगज्ज्योतिर्मल्लक समय १६१३ ई० सँ १६३७ ई० धरि छन्हि।[१३]

---

१२. क—राजा शिवसिंह रूपनाराएन लखिमा देइ कण्ठहारे।
—रागतरंगिणी, पृष्ठ—८५।

ख—जसमादेवि रमाने, भैरवसिंह भूप रस जाने।
—विद्यापति विशुद्ध पदावली पद संख्या—६८।

१३. द्रष्टव्य, डी० आर० रेग्मी, मेडिएभल नेपाल [खण्ड—२] पृष्ठ २१५।

ई अपन काव्य प्रेमक लेल प्रसिद्ध छथि तथा स्वयं सेहो काव्य रचना करैत छलाह। संगीत विषयक 'गीत पञ्चासिका'[14] हिनक प्रसिद्ध कृति अछि जाहिमे हिनक स्वरचित मैथिली गीत सभ उदाहृत अछि। हिनक मैथिली गीतक दूटा संग्रह—'राग-भजन-संग्रह'[15] एवं 'गीत संग्रह'[16] नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे संरक्षित अछि।

वंशमणि नामक एक जन मैथिल कवि हिनकहि आश्रित छलथिन्ह। एकटा पदमे त 'नृप जगजोति', 'चतुरभुज' ओ 'वंशमणि' तीनूक नाम सम्मिलित रूपेँ आयल अछि—

नृप जगजोति वंशमणि गाव।
चतुर चतुरभुज जुगुति बुझाव॥

त की चतुर चतुर्भुज ओ नृप जगज्ज्योतिर्मल्ल सरिपहुँ समकालीन छलाह ? 'भाषा-गीत-संग्रह' ओ 'राग-भजन-संग्रह' एहि दुनू संग्रहमे प्राप्त उपर्युक्त पदमे कोन पाठ मूल थीक ? जँ ई पद केवल 'राग भजन-संग्रह'मे रहैत त नृप जगज्ज्योतिर्मल्लक समकालीन कोनो अन्य चतुर्भुजक कल्पना कैल जा सकैत छल। मुदा वर्तमान परिस्थितिमें से युक्तिसंगत नहि प्रतीत होइछ। वस्तुतः अमृतकर ओ चतुर्भुज दुनुक पदक भणितामे 'कृष्णचरण'क नाम

---

१४. रचनाकाल—'ख-सर-तिथि' [१५५०] शकाब्द [= १६२८ई०] एहि ग्रन्थ मे ग्रन्थकारक स्वरचित ५३ टा पद उदाहृत अछि।

१५. 'राग-भजन-संग्रह' मे जगज्ज्योतिर्मल्लक अतिरिक्त अन्यान्यो कविक पद अछि। कुल पद ५२ टा अछि जाहि मे जगजोतिक ३५टा, विद्यापति, गोविन्द ओ वंशमणि मे प्रत्येक केर २-२ टा, चतुर चतुरभुजक चारि टा, सदानन्द, बुद्धिनाथ, नृपति सिंह, सुकवि, नरमेदि मे प्रत्येक केर १-१ टा तथा दू टा पद भणिता विहीन अछि।

१६. एहि ग्रन्थ मध्य जगज्ज्योतिर्मल्ल रचित १४८ टा पद अछि।

रहने तथा ताहि आधार पर दुनूकेँ एक कालक मानि लेने इयह अनुमान संगत लगैत अछि जे 'जगजोति-चतुरभुज'क भणिता बला पद वा 'जगजोति-वंशमणि-चतुरचतुरभुज' बला पद अपन मूल पदक रूपान्तर थीक। अस्तु, एहिसँ 'चतुर चतुरभुज'क लोकप्रियता त अवश्य आलोकित होइछ।

परिचय

चतुर्भुजक समयक अनुमान कैलो उत्तर हुनक प्रामाणिक परिचयक अभाव रहिये जाइछ। साहित्येतिहासक अनुशीलनसँ चतुर्भुज नामक अनेको साहित्यकारक सूचना प्राप्त होइछ अछि। Aufrecht कृत catalogus catalogorum एवं अन्य स्रोतसँ चतुर्भुज नामक निम्नलिखित ग्रन्थकारक पता चलैछ—

१. रसकल्पद्रुमक रचयिता।
२. हरिचरित नामक संस्कृत काव्यक प्रणेता।
३. वाचस्पति प्रणीत शुद्धिनिर्णयक प्रतिलिपिकार [लिपिकाल ५११ लं० सं०=१६३० ई०]।
४. विद्याकर सहस्रकमे उल्लिखित चतुर्भुज राय।
५. गीत गोपाल काव्यक रचयिता।
६. महाभारतक टीकाकार।
७. काव्यप्रकाशक टीकाकार।
८. अमरूशतकक टीकाकार।

डा० जयकान्तमिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहिमे सँ तीन गोट चतुर्भुजक नामोल्लेख कैलन्हि अछि जनिका ओ मैथिल कहैत छथि[१७]। पहिल छथि श्री हर्षक 'नैषध चरित'क अनुकरण पर रचित 'हरिचरित' नामक संस्कृत काव्यक प्रणेता। ई सम्पूर्ण ग्रन्थ भानुकर द्वारा उतारल मिथिलाक्षरमे भेटैत अछि जाहिमे

१७ द्रष्टव्य, हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, जिल्द-१, पृष्ठ-२११।

ओकर प्रतिलिपिकाल शाके १४४०[= १५१८ ई०] निर्दिष्ट अछि। दोसर एक जन चतुर्भुज रायक नामसँ प्रसिद्ध छथि से परवर्तीकालमे भेलाह। तथा तेसर चतुर्भुज ओ वाचस्पति मिश्रक शुद्धि निर्णयक प्रतिलिपिकर्त्ता केँ मानने छथि।

एहि तीनूमे हमर पदकर्त्ता के छथि तकर निर्णय करब कठिन अछि। एहिमे सँ केओ 'चतुर' विशेषण सँ युक्त छलाह सेहो स्थिर नहि होइछ। डा० सुकुमार सेन अपन 'विद्यापति-गोष्ठी' नामक ग्रन्थमे मोरंगक राजा वीरनारायण जनिक विरुद 'कंसदलन' वा 'सिंहदलन' छलन्हि, तनिक सभाकवि चतुर्भुजक चर्चा करैत छथि[१८]। रागतरंगिणीमे जे 'चतुर-चतुर्भुज'क भणिता सँ एकटा पद अछि ताहिकेँ ओ एही कविक रचना मानैत छथि। डा० सेनक मतानुसारेँ इयह चतुर्भुज, 'गीत-गोपाल' नामक काव्यक रचयिता छथि जाहि ग्रन्थमे ओ लिखने छथि जे "पोषक राजा [वीरनारायण]केँ जहाँगीर द्वारा 'सिंहदलन राय' केर उपाधि भेटल छलन्हि। बंगाब्द [?]मे ४०९ लं० सं० [= १६१८ ई०]मे लिखित एहि 'गीत-गोपाल'क एकटा प्रति नेपाल दरबारक संग्रहमे अछि। ई काव्य 'गीत-गोविन्द'क अनुकरण पर रचित अछि।" कविशेखर बदरीनाथ झा अपन 'मैथिली गीत रत्नावली'मे 'चतुर चतुरभुज'क पदकेँ उद्धृत करैत हुनका एही 'गीत-गोपाल' काव्यक कर्त्ता ओ महाभारतक 'तात्पर्य वर्णन'क टीकाकार मानने छथि[१९]। कविशेखरजी चतुर्भुजक पूर्ण-नाम चतुर्भुज मिश्र कहैत छथि।

जतय धरि 'हरि चरित काव्यम्' केर प्रणेता चतुर्भुजक प्रश्न अछि, हिनक एहि ग्रन्थक भानुकर द्वारा उतारल एकटा प्रतिक चर्चा पहिनहि कैल जा चुकल अछि। पुनः एहि ग्रन्थक एकटा तालपत्र पर तिरहुतामे लिखित प्रतिक निर्देश नेपालक वीर पुस्तकालयक [आब

---

१८ द्रष्टव्य, विद्यापति-गोष्ठी [हिन्दी संस्करण] पृष्ठ-६०।

१९ द्रष्टव्य, मैथिली गीत रत्नावली [द्वितीय संस्करण] पृष्ठ-३०।

राष्ट्रीय अभिलेखालयक] बृहत्सूचीपत्रम् [द्वितीय भाग, पृष्ठ–१७४]मे प्राप्त होइछ । एहि प्रतिमे एकर रचना काल [शरविधुमनुभिः] शाके १४१५ [= १४९३ ई०] उल्लिखित अछि[२०] । तेरह सर्गमे रचित काव्य कें 'श्रीकृष्णार्पित' कहल गेल अछि । चतुर्भुज कें अमृतकरक सम-कालीन मानि लेने एहि ग्रन्थक जे निर्दिष्ट रचनाकाल अछि ताहि संग संगति बैसैत अछि । मुदा समयक व्यतिक्रमकें ध्यानमे राखि 'गीत–गोपाल' कर्त्ता चतुर्भुज परवर्ती युगक प्रतीत होइत छथि । वस्तुतः भाषा–कवि चतुर्भुजक पदमे कृष्णक जाहि सरस लीलाक वर्णन पाओल जाइत अछि ओ 'हरि चरित काव्यम्' केर प्रथम सर्गमे वर्णित 'बाला विलास'क अनुरूप सिद्ध होइत अछि । अतः भाषा कवि 'चतुर चतुरभुज' सम्भवतः इयह हरिचरितकर्ता चतुर्भुज छथि ।

वंश परिचय

डा० जयकान्त मिश्र जे भानुकर द्वारा उतारल हरि चरितक एकटा प्रतिक उल्लेख कैने छथि ताहि क्रममे 'नेपाल कैटैलौग'मे निर्दिष्ट चतुर्भुजक वंशावलियो कें उद्धृत कैने छथि । ओ वंश वृक्ष एहि रूपें अछि[२१]—

मुण्ड आचार्य
|
दिवाकर आचार्य
|
हिनक वंशमे नित्यानन्द कवीन्द्र
|
हिनक वंशमे स्मृति कौमुदीक प्रणेता
|
हिनक पुत्र शिवदास
|

नारायण मिश्र | माधव पाठक | भानु शर्मा | चतुर्भुज

२० " शरविधुमनुभिः शकस्य वर्षे परिगणितेथ नभस्य शुक्लपक्षे । प्रतिपदि शशिवासरे सुपूर्ण हरिचरिताह्वयनव्यकाव्यमेतत् ।'

२१ द्रष्टव्य, हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, जिल्द-१, पृष्ठ-२१२ ।

'हरिचरित काव्यम्' केर लिपिकार भानुकर ओ भानु शर्माकें एकहि व्यक्ति मानल जा सकैछ। इयह भानु शर्मा, सम्भवतः हमर भाषा कवि भानु छथि जनिक एकटा पद नेपाल पदावलीमे प्राप्त भेल अछि[२२]। एहि पदक भणिताक आधार पर ओ चन्द्र सिंहक सम-सामयिक सिद्ध होइत छथि[२३]। ई चन्द्र सिंह महाराज नरसिंहक पुत्र ओ महाराज भैरव सिंह [१४४६–१४८२]क वैमात्रेय छलथिन्ह। विद्यापति जे अपन 'दुर्गाभक्तितरंगिणी'क रचना भैरव सिंहक आदेश सँ कैलन्हि ताहि मध्य चन्द्रसिंहोक नामोल्लेख कैने छथिन्ह[२४]। अमृतकरक पदक भणितामे प्राप्त भैरव सिंहक नामक विषयमे पहिनहि कहल जा चुकल अछि। से एहि सभ सँ विद्यापति, अमृतकर ओ चतुर्भुज तीनूक एकहि कालमे अवस्थिति प्रमाणित होइत अछि।

प्रस्तुत संकलन

जेना पूर्वमे निवेदन कैल अछि, चतुर्भुज रचित एकटा पद लोचन कृत 'रागतरंगिणी'मे संकलित भेटैत अछि। एकर अति-

---

२२ द्रष्टव्य, विद्यापति-पदावली, भाग–१, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना। पृष्ठ–३७९–३८०।

२३ हृदय उखलु मोतिम हारा
निफुल फुल मालति माला
चन्द्रसिंह नरेश जीवओ
भानु जम्पए रे।

२४ भूप श्री भवसिंह वंश तिलकः श्री दर्पनारायण-
स्वात्मानन्दन नन्दन क्षितिपति श्रीधीरसिंहः कृती।
शक्र श्री सह भूरुपेन्द्र महिमश्री भैरवक्ष्माभुजो-
दुर्गाभक्तितरङ्गिणी कृतिरियन्तस्यास्तु सत्प्रीतये॥

रिक्त एकटा पद डा० ग्रियर्सन अपन 'ट्वेण्टीवन वैष्णव हिम्स' नामक ग्रन्थमे उद्धृत कैने छथि। मिथिलाक स्रोत सँ चतुर्भुज रचित इयह दूटा पद अखन धरि प्रकाशमे आएल अछि। तखन नेपालमे प्राप्त उपर्युक्त 'भाषा-गीत-संग्रह'मे हिनक बारह टा पद उपलब्ध होइछ। एहि बारहोमे सँ एकटा पद बंगलामे अछि। पुनः नेपाले मे प्राप्त 'राग-भजन-संग्रह'मे हिनक तीन टा पद संगृहीत अछि। मुदा एहि तीनूमे सँ दूटा पूर्वोक्त 'भाषा-गीत-संग्रहो' ताहूमे अछि। एहि प्रकारेँ केवल पन्द्रहटा पद आहि केँ चतुर्भुज रचित कहब' अद्यावधि उपलब्ध भेल अछि। बाबू नगेन्द्र नाथ गुप्त अपन 'विद्यापति पदावली'मे एकटा पद संकलित कैने छथि जकर भणितामे विद्यापति ओ चतुर्भुज दुनूक नाम छन्हि। परन्तु ई पद विद्यापतियेक थिकन्हि तकर स्पष्टीकरण 'भाषा-गीत-संग्रह'क अनुशीलन सँ भऽ जाइछ जाहिमे एहि पदकेँ केवल विद्यापतिक भणिता दय उद्धृत कैल गेल अछि। तहिना 'राग-भजन-संग्रह'क एकटा पदमे चतुर्भुज ओ जगज्ज्योतिर्मल्लक अतिरिक्त वंशमणिक नाम भेटैछ। यद्यपि एहि प्रसंगमे दृढ़तापूर्वक नहि कहल जा सकैछ जे ई पद चतुर्भुजेक थिकन्हि मुदा जँ हुनक नहियो थिकन्हि त एकरा पढ़ला उत्तर एतेक त अवश्य भान होइछ जे चतुर्भुजेक भावक परिग्रहण कय वंशमणि एहि पदकेँ रचने हैताह।

अस्तु ! केवल एहि उपलब्ध पन्द्रहो पद केँ विशुद्ध ओ प्रामाणिक मानि ई नहि निश्चय करबाक थीक जे चतुर्भुज एतबहि पदक

मर्यादाम्बुनिधिः सुदानयविधिः प्रौढ़प्रतापावधिः
सद्यः सङ्गरसङ्गरङ्ग विजयश्री लब्धदोः सन्निधिः।
यस्य क्षीरसमुद्र मुद्र [तुल्य ?] यशसो रामस्य सौमित्रिवत-
क्षोणीमण्डलमण्डनो विजयते श्री चन्द्रसिंहोऽनुजः॥

रचयिता छथि। एतेक अवश्य जे हुनक कृतित्वक विशालताक परीक्षण समय सापेक्ष अछि, भविष्यमे जखन सभटा पद प्रकाशमे आओत तखनहि ओकर वास्तविक परिमाणक बोध हैत तथा हुनक कवित्वक समुचित मूल्यांकन सम्भव हैत। सम्प्रति हुनक पन्द्रहो पद कें प्रस्तुत संग्रह मध्य अवतरित कैल गेल अछि। परिशिष्टक अन्तर्गत जे तीनटा पद देल गेल अछि से प्रामाण्य ग्रह-संदिग्ध अछि। एकटा पद तँ भणिता विहीन अछि। मुदा ओ चतर्भुजेक थीक आ' एकरा स्वीकार करब अयुक्तिकर नहि हैत।

कवित्व

कवि चतुर्भुज, 'चतुरभुज' क नाम सँ ख्यात छलाह। ई 'चतुर' विशेषण हिनक अभिन्न आस्पद भऽ गेल अछि। ओना त किछु एहनो पद अछि जाहिमे केवल 'चतुरभुज'क भणिता अछि, मुदा अधिकांश पदमे कवि 'चतुर' विशेषणक प्रयोग करब नहि बिसरैत छथि। वस्तुतः ई कविक काव्य-चातुर्य्यक परिचायक अछि संगहि हिनक लोकप्रियताक द्योतक। हिनक काव्य हिनका एक गोट प्रतिभाशाली कवि सिद्ध करैत अछि। सरस भावाभिव्यक्ति, अबाध काव्य प्रवाह, छन्दक मृदुल झंकार, संगीतक तान-लय, भाषाक सहज रूप, सभ तरहेँ चतुर्भुज उच्चकोटिक कवि छथि। हिनका विद्यापति–गोष्ठीक कवि कहब। विद्यापतिये सदृश हिनकहुँ काव्य सृजनक मूल प्रेरणा राधा-कृष्णक लीला-विलासक अवलम्बन छलन्हि। स्वयं विद्यापति एहि विषयमे महाकवि जयदेवक अनुवर्ती भेलाह। जयदेव अपन 'गीत-गोविन्द'क फलश्रुतिक रूपमे 'हरिस्मरणे सरसं मनः' एवं 'विलास-कलासु-कुतूहलम्'क परस्पर सम्मिलित भावधाराकेँ उपस्थित कैलन्हि। महाकविक ई रसविदग्धता 'कोमलकान्त पदावली'क परिधानमे अत्यन्त आकर्षक रूप ग्रहण कैलक। कृष्णलीलाक ई कमनीय काव्य

भक्तक सहज उद्गार प्रमाणित भेल। भक्ति मूलतः एक गोट रागात्मक अभिव्यक्ति थीक जाहिमे रतिभावक समावेश सहजहि भऽ जाइछ। से 'गीत-गोविन्द'मे "हिनक भाव भागवत अछि मुदा भावाभिव्यक्ति विलास कलाक अनुरूप प्रसादिक। हिनक उद्देश्य काव्य रचना करक छलन्हि। भाषाक प्रयोग तदनुरूप भावमूलक रहल अछि। श्रृंगार जखन वस्तुमूलक अथवा लोकविषयक होइछ तखन ओ जड़ोन्मुख भऽ जाइछ। मुदा जखन ओ भागवद्विषयक रहैछ तखन ओ चिन्मुख भऽ जाइत अछि।" एहि प्रेम वन्या केँ लोक-भाषा-वाहिनी बनाय विद्यापति अभिनव जयदेवक अनुगत उपाधि सँ विभूषित भेलाह। फलतः विद्यापति द्वारा आदिरसक आनुषङ्गिक रूपमे राधाकृष्णक रम्य लीलाक जे गायन भेल सैह हुनक समकालीन ओ अव्यवहित परवर्ती भाषा कवि-समुदाय द्वारा अनुकृत भेल। लीला-विलासक एहि मधुर गीतमे भक्ति जेना श्रृंगारक अनुगत भए प्रकट भेल; प्राकृत चित्तभूमिक पृष्ठाधारे पर धर्मबोधक सार्थकता प्रतिपादित भेल; धर्म अपन साम्प्रदायिक मत-वाद सँ ऊपर उठि काव्यवादक सुषमासँ मर्मस्पर्शी भऽ उठल। वस्तुतः कृष्णलीलाक ई मनोरम काव्य कवि हृदयक भाव-सुधासँ स्निग्ध भए भारतीय वाङ्मयक चिरन्तन रसतीर्थक रूपमे समादृत अछि।

चतुर चतुर्भुज, विद्यापतिक पद वैभव सँ सुपरिचित एवं पूर्णतः प्रभावित छलाह। हिनक कवि–व्यक्तित्वक आवर्तनमे विद्यापतिक योगदान सुस्पष्ट अछि। हुनकहि अनुवर्ती भए ओ युगल लीलाकेँ मर्त्य प्रीतिक स्थूल–सूक्ष्म नाना वैचित्र्यमय मंजुल वर्णनक सङ्ग अवतरित कैलन्हि अछि। विद्यापतियेक अनुरूप हिनक अभि–व्यंजना भंगिमामे मानवीय' लीलाक निपुणता लक्षित होइछ। विद्या–पतिक 'सुनागर' कृष्ण ओ 'वरयौवति' राधिका हिनकहु काव्यपृष्ठ पर पार्थिव नायिकाक रूपमे प्रकट भेल छथि। मुदा एहि समस्त योजना मे जे एक गोट अनिर्वचनीय अध्यात्म आकांक्षा अन्तर्निहित

अछि ताहि सँ विद्यापतियेक काव्य सदृश हिनकहुँ रचना महिमान्वित भऽ उठल अछि। एकर अर्थ-समृद्ध परिणति सँ लोकोत्तर आनन्दक स्फूर्ति होइछ। वस्तुतः प्राकृत प्रेमक ई मधुर गान अप्राकृत अनुरागक दिव्य संगीत थीक।

तहिना कलात्मकताक दृष्टियें विद्यापति ओ चतुर चतुर्भुजक कविता एकहि सुरमे ग्रथित अछि। विद्यापतिक भाषा,शब्द चयन, काव्य-रीति,स्वर-सङ्गीत सभ किछु एक गोट सामान्य उत्तराधिकारक रूपमे चतुर्भुजक काव्यकेँ प्रभाव-पुष्ट कैलक अछि। चतुर्भुजक एकटा विशेषता जे देखब ओ अछि हिनक प्रकृति प्रेम ! नायिकाक मादक-मांसल रूप-राशि केँ प्रकृतिक पृष्ठभूमिमे राखि कवि ओकर शील-सौन्दर्य, मिलन-विरह ओ मान-अभिसारक बहुविध बखान कैने छथि। एहि सभ पदमे हिनक रूपक-रचनाक विशिष्ट विन्यास परिलक्षित होइछ। ई सभटा पद हिनक अभिव्यक्ति निपुणताक प्रकाशक अछि तहिना 'लगनी' सदृश ग्राम्य लय पर रचित गीत हिनक लोकानु-भूतिक अभिव्यंजक। वस्तुतः विद्यापति जे लोकजीवन ओ सद्काव्य केँ अन्योन्याश्रित बना देने छलाह तदनुरूप चतुर्भुज स्वयं केँ लोकजीवनमे भिझरा देने छथि।

गीत सप्तदशी

१

साँझक अतिथि[1] भागें विहि आन।
विमुखें पाप बड़ अछ, ए गेआन॥
हमरेओ कन्त बसए परदेस।
अथिक पथिक देखि मोहि कलेस॥
पथिक वास भमि जनतए लेह।
हमरा दोसर तेसर नहि गेह॥
चतुर चतुरभुज ई रस जानि।
कौसलें अभिमत करए सआनि॥

—राग०, पृष्ठ ११०।

मूलपाठ—१. अतिथ।

अर्थ—सायंकालक पाहुन के विधाता संयोगहि सँ आनलन्हि अछि। (एहि सुअवसर पर) विमुख भेने बड़ पाप (अधलाह)! (अवसर सँ लाभ उठायब) इयह उचित (ज्ञान) अछि। हमर कन्त परदेश मे बसैत छथि, (अतः) पथिक के देखि (काम-) क्लेश अछि। हे पथिक! कतहुँ आन ठाम जाय डेरा दिअ। (हम एकसरि)! हमरा घरमे केओ दोसर-तेसर नहि। चतुर चतुभुंज (स्वयंदूतिका नायिकाक उक्ति) एहि रसकें बुझैत छथि। युवती चतुरतापूर्वक अपन अभीष्ट व्यक्त करैत अछि।

२

नव तनु नव अनुराग, माधव
नव परिचय रस जाग।

दुहु मन बसु एक काज, माधव
आँतर भए रहु लाज ॥ ॥

दिन-दिन दुहु-तन छीन, माधव
एकओ नै अपन अधीन ॥

विनय न एको भाख, माधव
निअ निअ गौरव राख ॥

हृदय धरिअ जत गोए, माधव
नयन वेकत तत होए।

चतुर चतुरभुज भान, माधव
प्रेम न होए पुरान ॥

—ट० वै० हि०—पृ० ८६।

अर्थ—हे कृष्ण ! (युववास्थाक) नव वयश, अभिनव प्रेम, पहिल परिचय, (मुदा) रस जागल, (प्रथमावत्तीर्णमदना) ।

हे कृष्ण ! दुनुक मनमे एकहि वस्तु (काज)क (भावना) अछि। (मुदा से केओ नहि बजैछ) अन्तरमे लाज (क व्यवधान) अछि।

हे कृष्ण ! दिनानुदिन (विरह सँ अहाँ) दुनूक शरीर दुर्बल भेल जाइछ। केओ अपना अधीन नहि अछि (अर्थात्—दुनू अपन मन एक दोसरा कें अर्पित कऽ चुकल अछि)

हे कृष्ण ! (दुनू मे सँ) केओ निवेदनक (एकहु शब्द) नहि बजैछ। (दुनू) अपन-अपन गौरव रखने अछि।

हे कृष्ण ! हृदयमे जतेक नुकबंत अछि, (मनोभिलाषा) आँखि सँ ततेक व्यक्त भऽ जाइछ।

चतुर चतुरभुंज कहैत छथि हे कृष्ण ! प्रेम (त नित्य नवीन अछि, ओ) पुरान नहि होइछ। (तेँ समय बितनहु संगममे त्रुटिक सम्भावना नहि)

३

जओं हरि न जाएब तोंहे तसु गेहा ।
आज कओनहु परि न धरति देहा ॥
विरहानल तापित तनु काँती ।
धरए धमित हाटक के भाँती ॥
तसु उपचार सकल पर आसे ।
आनन पुलक निरूपए साँसे ॥
आओत आहे धनि हरि तुअ पासे ।
जीब कें कुण्डल देअ विसवासे ॥
भनइ चतुरभुज भज जे जाही ।
बड़ नहि परिहर लघु दोसे ताही ॥

—भा० गी० सं०, पद सं० ९ ।

अर्थ —(राधाक दूती कृष्णसँ जाए निवेदन करैत छथिन्ह) हे कृष्ण ! यदि अहाँ ओकरा (नायिकाक) ओतय (भेंट करय) नहि जयबैक त आइ ओ कोने प्रकारेँ शरीर धारण कैने नहि रहति । (ओकर मृत्यु अवश्यम्भावी छैक ।) विरहक आगिमे तप्त ओकर शरीरक कान्ति, आगिमे धिपाओल सोन सदृश (पीताभ) भेल अछि । ओकर समस्त उपचार आनक आशा पर (अवलम्बित) छैक । (अर्थात्—नायिका अपनहुँ उपचार करबामे असमर्थ भऽ गेल अछि ।) (सखी लोकनि रहि रहि कऽ) ओकर आकृति पर रोमाञ्च ओ साँसक निरीक्षण करैत जाइत छथिन्ह । "हे धन्या ! हरि (श्रीकृष्ण) अहाँक लग अओताह"—(नायिका कें) एहि प्रकारक विश्वास दिऔल जाइछ जे एहिसँ ओ प्राण कें रोध देअ । चतुरचतुर्भुज कहैत छथि, जे जकरा भजैत अछि, तकर लघु दोषक कारणेँ श्रेष्ठजन ओकर उपेक्षा नहि करैत् छथि । (अर्थात् नायिकाक सामान्य दोषक कारणेँ, यदि एहन कोनो दोष ओकरा सँ भेल होइक, ओकर त्याग करब उचित नहि)

४

जनमहुँ[१] न होएत दरसन बाधे।
सुपहु सिनेह कएल एँ[२] साधे॥
न बुझल मन्द करम परिनामे।
अचिरहिँ[३] होएत ए विधि विधि वामे॥
कि कहब अगे सखि निअ अगेआने।
बड़ कए परबस कएल पराने॥
परबस सओ परबस जन नेहे।
जनमहु जन होअ मागब एहे॥
निमिषओ सुपहु समागम तूले।
न थिक कतहु किछु जगत[४] अमूले॥
इ गुनि अगेधनि करह[५] गेआने[६]।
रसमय चतुर चतुरभुज भाने॥

—भा० गी० सं० १०।

मूलपाठ—४ जागत।

पाठभेद—राग भजन संग्रह (पद संख्या—८) १ जनमहु २ कएलक ३ अचिरहिँ ४ जगतँ ५ करसि ६ गेँयाने।

अर्थ—जीवन पर्यन्त दर्शनमे कोनो बाधा नहि हैत, इयह साध लय सुपहु सँ सिनेह कैल। मुदा) अपन दुर्भाग्यक परिणाम दिश ध्यान नहि गेल जे अल्पकालहिमें विधाता एहि प्रकारेँ प्रतिकूल भऽ जैताह। हे सखि! अपन अज्ञानक कथा की कहू! (हुनका) पैघ बुझि हम अपन प्राणकेँ पराधीन कैल (अर्थात् श्रीकृष्ण केँ पैघ लोक बुझि अपन प्राण हम हुनका अर्पित कऽ देल।) (मुदा) पर (रमणी)क वश मे रहनिहार (श्रीकृष्ण) क संग (हमरा सन) पराधीन (कुलवधू)क स्नेह! जन्मजन्मान्तरहु मे एहि तरहक स्नेह नहि हो, इयह (वरदान) माङब। क्षणो भरिक लेल पतिक समागमक तुलनामे, ओहेन मूल्यवान, संसारमे कतहु किछु नहि अछि। रसमय चतुर चतुर्भुज कहैत छथि, एकरा मनमे बुझि हे धनि, ज्ञान करू।

५

मलयज पङ्कज दय दिअ आनी।
पाब पराभव अधिक सयाँनी॥
धनि हित लागि करए जत जोई।
विहि विपरिते सबे विपरित होई॥
ए हरि कि कहब सुन्दरि कहिनी।
के जान कीदहुँ होइति अबे बहिनी॥
हेरसि हरषि धनि आएल नाहे।
कपट वचने खने दुर जा दाहे॥
ताहे आबे न होअ नोर अवसाने।
न देखए नयने न सूनए काने॥
आबे कैसें मनाओ सुचित होइति साई।
हृदय हेराएल संसए पाई॥
भनइ चतुरभुज अपन गे आने।
आइति राषिअ परक पराने॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या—११

अर्थ—चानन ओ कमल (सदृश उत्ताप शोधक पदार्थ) आनिकऽ देल, (तथापि) सयानि (विरह विदग्धा नायिका) अधिक कष्ट पाबि रहल छथि। धन्या (नायिका)क लाभक लेल जे केओ जतेक (उपचार) करैत अछि, विधाताक प्रतिकूल रहने, सभक प्रभाव, विपरीते होइछ। हे हरि ! सुन्दरी (राधा) क कथा की कहब ? के जनैछ जे सखी (बहिन) कें आब की हैतैन्ह ? धन्या अपन प्रत्यागत नाथ दिश हर्षित भेलि निहारैत छथि, (मुदा) ओ (नायिका कें मिलन सुखसँ वंचित राखि) अपन कपट-वाणी सँ [मिथ्या स्नेहक प्रलोभन दए) क्षणहि मे दूर जाए [प्रवासी वनि) हुनका (नायिका कें, विरह जन्य पीड़ा मे) जरा रहल छथिन्ह। अतः आब हुनक नोर क ओर-छोर नहि छन्हि। ओ ने त आँखि सँ देखितहि छथि आ' ने कान सँ सुनतहि छथि। आब हुनका कोन प्रकारें बुझाओल जाए जे ओ सुचित होथि। एही संशय कें प्राप्त हृदय हेराएल अछि। चतुर्भुज अपना बुद्धियें कहैत छथि जे (हे कृष्ण !) दोसरक प्राणक रक्षा करू।

६

गुन निधि विधि सिरिजलि जनि रे, धरि माझहि[1] देह।
तेँ[2] भेलि तहाहि[3] खीनि सनि रे, धनि मति मोरि एह॥
सुकृत[4] सहस बले देखलि रे, मोऍ[5] सुवदनि आज।
कतेँ परयासेँ[6] विहलि विहि रे, तेजिए सबे काज॥
सुघट नितम्ब पयोधर रे, गढ़ि तषने निहारि।
गौरव बुझए लागि जनि रे, तौललि वर नारि॥
गरुअ भेल कुच तेँ जनि रे, नति[7] सनि होअ भान।
त्रिवलि तरङ्गिनि तेहि भेल रे, जगँ[8] के नहि जान॥

मूल पाठ—७. नवि।

पाठभेद—प्रस्तुत पद 'राग भजन संग्रह' (पद संख्या—८) नामक पाण्डुलिपि मे सेहो उपलब्ध होइछ। पाठभेद एहि प्रकारेँ अछि—

१. माँझहि २. ते ३. तहाँहि ४. सुकृत ५. मोए ६. परवासेँ ७. एहि संग्रहमे 'नति' सैह पाठ अछि ८. जग ९. अन्तिम दुनू पंक्ति एहि रूपेँ अछि—

सिझल सितासित से पए, तसु दरसन पाव।
भनइ चतुरभुज बूझए रे, नृप जगजोति भाव॥

अर्थ—गुणमागर विधाता जें लऽ कऽ (नायिकाकु) मध्य देह (कटि प्रदेश) लग धऽ कऽ रचना कैलन्हि अतः (जतय विधाता हाथ देने रहथिन्ह) ओतय (कटि प्रदेश) क्षीण (पातर) भऽ गेल। हे धन्या! हमर त इयह मत अछि (अर्थात् हम त इयह बुझैत छी)। अपन सहस्र सुकर्मक बलें, सुवदनिकेँ हम आइ देखल। कतेक प्रयास कय विधाता, अपन (अन्य) सभ काज केँ छोड़ि हिनक (नायिकाक) विधान (रचना) कैलन्हि। सुन्दर नितम्ब ओ पयोधर केँ गढ़ि ओ तत्काल ध्यान पूर्वक देखलन्हि। लागल जेना गौरव (नितम्ब ओ पयोधर,

मदन महासिधि वर तनु रे, से चतरभुज गाव ।
तेजल सिवासिवँ जेँ तनु रे, से दरसन पाव¹ ॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या ६९ ।

एहिमे ककर बेशी गौरव छैक) बुझबाक लेल सुन्दरि नायिका केँ तौलने होथि ।कुच भारी भऽ गेल तेँ ओ (नायिका) झुकल सन (नत वदना) बुझि पड़ैत अछि । त्रिवली रूपी नदी तकरहि परिणाम थोक. संसार मे (एहि विषय केँ) के नहि जनैंत अछि । कामदेवक महासिद्धसँ प्राप्त सुदर्शन शरोर ! तकरहि चतुर्भुज गबैत छथि । (कामदेव) जाहि शरीर केँ शंकर-पार्वतीक (मिलनक) लेल त्यागि देलन्हि, ताहो सुन्दर शरीरक दर्शन पबैत छी ।

विशेष—राग भजन संग्रह मे देल गेल भणिता वला दुनू पंक्तिक अर्थ एहि प्रकारेँ होयत—जे अपना केँ गंगा-यमुना सितासित) क संगम पर (प्रयाग-मे) सिद्ध कैलक अछि सैह (अपन तपस्या सँ अर्जित पुण्यक प्रसादात्) एहि नायिकाक दर्शन पबैत अछि । चतुर्भुज एकरा कहैत छथि आ' नृप जगज्योति एकर भावक बुझनिहार छथि ।

वस्तुतः भा० गी० सं० क 'सिवासिवँ' क स्थानमे 'सितासित' रहब, सैह विशेष उपयुक्त बुझना जाइछ । चतुर्भुज पर विद्यापतिक बड़ बेशी प्रभाव देखल जाइछ । विद्यापतिक—

"त्रिवलि तरङ्ग सितासित सङ्गम उरज शम्भु निरमान"

एवं

"पएसि पयाग जाग सत जागइ सोइ पाबए बहुभागी ।"

आदि पंक्ति क आलोकमे 'सिवासिवँ'क स्थानमे 'सितासित' क रहब, तकरहि समर्थन होइछ । सम्भव जे लिपिकारक दोष सँ ई भ्रान्ति भेल हो ।

७

आध वदन तनु आधे ओ आध पयोधरि रे ।
आँचर वसने झँपाइए गाव मधुर सरे रे ॥
पिसए बैसलि धनि कौतुके समुचित सखि सङ्गे रे ।
दगध मनोज जिआबए अनुषने तने भङ्गे रे ॥
पीन पयोधर धर भरेँ दुहु दुहु पेलए रे ।
मनमथ नृपति निदेसे जौवन गज खेलए रे ॥
सेद सलिलेँ तनु लागल अपरुब अंशुक रे ।
धनि बेकताएल अभिनव नख खत किंशुक रे ॥
चतुर चतुरभुजेँ गाओल रस बुझ नागर रे ।
कृष्णचरण गुनसागर त्रिभुवन आगर रे ॥

—भा॰ गी॰ सं॰, पद संख्या १३२ ।

अर्थ—आधा मुख, शरीरक आधहि भाग ओ एकहि टा पयोधर (इयह त दृश्यमान अछि)। आँचर सँ झँपने (नायिका) मधुर स्वर मे गाबि रहल अछि। क्रीड़ावश नायिका अपन समवयस्का सखि लोकनिक संग (जाँत) पिसय बैसलि। (जाँत पिसैत) ओकर शरीरक भंगिमा प्रतिक्षण दग्ध कामदेव केँ पुनर्जीवित कऽ रहल अछि। दुनू पुष्ट स्तन, छाती पर आश्रित भऽ (अङ्गसंचालन सँ प्रेरित) एक दोसरा केँ ठेलैत अछि। (बुझि पड़ैछ) जेना कामदेव रूपी राजाक आदेश सँ यौवन रूपी गज क्रीड़ारत हो। स्वेदक कारणेँ, (पहिरनक) अपूर्व वस्त्र शरीर सँ सटि गेल अछि। (सटल वस्त्रक तर सँ) पलासक फूल सदृश लाल नायिकाक नख क्षत (पूर्वरातिक विलास चिह्न ओकर उरोज पर उखरल) व्यक्त भऽ उठल। चतुर चतुर्भुज एहि (मधुर गीत) केँ गौलन्हि। (एकर) रस रसिक जन बुझैत छथि और (एहन जे रसिक) कृष्णचरण, से गुणक सागर ओ तीनू लोक मे चतुर छथि !

८

जखने सञो देखल रे मोए सुन्दर कान्हे ।
तखन सञो मदन-वेदन मन जाने ॥
आनन लोनुअ रे चल लोचन जोरा ।
ससि बसि पिब जनि अमिअ चकोरा ॥
भउहँ भाँगि रस रे हसि हेरलन्हि थोरा ।
तहिखने हरलन्हि मानस मोरा ॥
चाँद चाँदन पिक रे मधुकर तनु जारे ।
हरि हरि बैरि भेल सकल संसारे ॥
चतुर चतुरभुज रे भन सुन वरनारी ।
हरत तोहर दुख जानि मुरारी ॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या १३३ ।

अर्थ—जखनहि सँ हम सुदर्शन श्रीकृष्ण केँ देखलऐन्ह तखनहिसँ मन मे कामवेदनाक अनुभव भऽ रहल अछि। लावण्ययुक्त मुखमण्डल आ' ताहिमे चंचल लोचनक एक जोरा ! (लगैछ) जेना (आँखि रूपी) चकोर (मुखरूपी) चन्द्रमामे बसि अमृतपान कऽ रहल हो। (जखन) प्रेमपूर्ण कटाक्ष सँ युक्त हास्य द्वारा (ओ) हमरा (दिश) कनेके तकलन्हि, तखनहि ओ हमर मन केँ हरि लेलन्हि। (हुनक विरहमे आब) चन्द्रमा, चानन पिक ओ भ्रमर सभ हमर शरीर केँ दग्ध कए रहल अछि। हे हरि, (जेना) समस्त संसार हमर शत्रु भऽ गेल अछि। चतुर चतुर्भुज कहैत छथि—हे नारी श्रेष्ठ ! सुनू, मुरारी श्रीकृष्ण अहाँक (एहि विरह जन्य) क्लेश केँ बुझि ओकर हरण कऽ लेताह।

६

अति अनुरागिनि पुरुब दिशा धनि सिन्दुर अरुन[1] मुख हेरी।
पति रवि कत बेरि परसए[2] एक बेरि तिमिर वसन वर फेरी ॥
सुन्दरि बाँक वदने हेर मन्दा।
बिनु देखि हिमकर होअओ पयोधर चकेव जुगल सानन्दा ॥
चारि पहर सिंचि हास अभिरुचि कत दरसाइए नेहा।
जामिनि रमि लए लाजे कलामए चलल चरम गिरी गेहा ॥
पाथरेँ गढ़ल हृदय तुअ माननि लखि[3] कुचगिरि परमाने।
की कुच सैल समाजेँ कठिन भेल के अबधा (र) ए जाने।

मूलपाठ—१. उरुन २. 'परसए' केर बाद पुनः 'परस' शब्द लिखल अछि ३. लथि।

अर्थ—अत्यधिक अनुरागवती पूर्ब दिशा रूपी रमणीक अरुण रूपी सिन्दूर बिन्दु सँ (उद्भासित) मुख केँ देखि सूर्य रूपी पति कए बेरि नायिकाकेँ (प्रेमसँ) स्पर्श करैत छथि आ' एक बेरि हुनक अन्धकार रूपी सुन्दर वस्त्रकेँ उघारि दैत छथि। (अर्थात् हुनुक मिलन भऽ जाइछ) (एहि पृष्ठभूमिमे मानिनी नायिकाक प्रति नायकक उक्ति) :—

—हे सुन्दरी ! मुख केँ कनेक घुमाइयो कऽ मन्दो दृष्टिसँ (हमरा दिश) ताकू ! (अर्थात् कुटिल कटाक्षो सँ कनेक हमरा दिश ताकू) (मुख रूपी) चन्द्रमाकेँ नहि देखि (पयोधर रूपी) चकबा-चकबी सानन्द होअओ। (अर्थात् अहाँक मान आ' ताहि कारणेँ जे अहाँ मुँहकेँ झाँपि कऽ रखने छी, हमरा लोकनिक केलि क्रीड़ामे बाधक नहि होअओ।)

चारि पहरक जे राति•! तकरा अपन हास ओ रुचि सँ सेचनकय तथा कतेको प्रकार स्नेह प्रदर्शन द्वारा यामिनीक संग रमण कय सलज्ज भए चन्द्रमा चरमगिरि–गृह दिश चलताह। (मुदा प्रभात भेलहुँ उत्तर हम अहाँक रतिदानक प्रतीक्षामे छीहे।)

भागेँ भजह हरि मन दन्द परिहरि चतुर चतुरभुज भाने।
कहए मदन विधि बिधुमुखि निरवधि पिअ नहि अति माने॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या १३८।

हे मानिनि ! अहाँक हृदय पाथर सँ तने गढ़ल अछि ? (भइयो मकैछ कारण जे) तकर प्रमाण त कुचगिरिकेँ देखि भेटैत अछि। अथवा के जानय जे कुचगिरि सँ सांसर्गक कारणेँ हृदय कठोर भऽ गेल अछि ?

चतुर चतुभुज कहैत छथि—मनक सभ तारतम्य केँ मेटाय भाग्य सँ हरिक भजन करू। (अर्थात्—भाग्य फलहिसँ भगवानक सेवाक अवसर प्राप्त होइछ।) हे चन्द्रमुखी ! कामदेवक विधान इयह कहैत अछि जे सर्वदा अतिमान प्रिय नहि होइछ।

१०

हँसलि नलिनि गए मधुकर चुम्बए हाँस जुगल भेल मेरी।
कओन करमबल विपरित फल नहि चकेव मिथुन कर केली॥
मानिनि अबहु तेजह धनि माने।
दिवस चारि युग कह कैसेँ खेपवि को देखि धरब पराने॥
हाँस[1] पवन भर कलरव कलरव कर हुकार कत बेरी।
खसल तम अञ्चल रोसे अरुण भेल पुरुव दिसा मुख हेरी॥
पड़ल कुसुम धन रतन विभूषण तारागण अति संके।
वारुनि मगन ससि पर गिरि चलु निसि कलंक कपटे कए अंके॥

मूल पाठ—१. साँस।

अर्थ—प्रफुल्लित कमलिनीकेँ भ्रमर जा कऽ चुम्बन करैछ। (तहिना) हंस युगलक मिलन भऽ गेल। (अर्थात् भोर भऽ रहल अछि।) मुदा कोन दुर्भाग्यक ई प्रतिकूल परिणाम थीक जे चकवा –चकबीक जोड़ी (जखन कि भोर भेला उत्तर दुनुक मिलन अवाध अछि) केलि करबा सँ वंचित अछि। (अर्थात् राति बितलो उत्तर नायिका अखन धरि मान कैनहि छथि आ नायक मायिकाक केलि-क्रीड़ा सम्भव नहि भेल अछि।)

हे मानिनि! हे धनि!! आबहु अपन मानक परित्याग करू। चारियुग सदृश (ई चारि पहरक) दिन, तकरा (हम) कोना बिताएब? की देखि कऽ प्राण धारण कैने रहब?

हंस अपन कलरव (मधुर ध्वनि) सँ वायु मण्डलकेँ भरि रहल अछि। (मिलन अमोद सँ आह्लादित भए) ओ अनेको बेर हुंकार करैत अछि। अन्धकार रूपी आँचर कें ससरि जैबाक कारणें (उधार भऽ जैबा सँ संकुचित) पूर्व दिशा रूपो नायिकाक रक्ताभ मुख कें देखैत छी (अर्थात आब पूर्णतः प्रभात भऽ गेल अछि)

चतुर चतुरभुज वचन धरह मन सुनि धनि परम जतने।
माने महघि रति देह कलावति पिअ पेम परसरतने॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या १४३।

फूल रूपी धन झड़ि गेल अछि। रत्न सदृश शोभायमान तरेगन (निष्प्रभ भऽ जैबाक भय सँ) सशंकित अछि। पश्चिम दिशा (रूपी नायिका) पर आकृष्ट चन्द्रमा रात्रिक कलंक–कपट कें अंक में लेने अन्य पहाड़ दिश बिदा भऽ गेलाह।

चतुर चतुरभुज कहैत छथि, हे धन्या। ध्यान पूर्वक हमर वचन कें सूनि मन मे धारण करू। मानो सँ पैघ जे रति अछि, से हे कलावती (अपन प्रियतम कें) प्रदान करू। प्रियतमक प्रेम पारसमणि सदृश (मूल्यवान) होइछ।

विशेष––पाँचम पंक्तिमे 'हाँस'क स्थानमे मूलपाठ 'साँस', पढ़ने ओहि पंक्तिक एहि प्रकारें अर्थ कैल जा सकैछ––कोइली (कलरव) क स्वर (साँस) वायु-मण्डल (पवन)मे भरि गेल अछि, परबा (कलरव) बेर-बेर घुटकैत (हुकार) अछि। (अर्थात् भोर भऽ गेल अछि।)

११

वदन चाँद धुअ, केस तिमिर तुअ,
कि करह राति सजनी।
हार नखत रुच, निचल चकेव कुच,
मोरें मने तोहहि रजनी॥
आरे साजनि, चल चल, तोहर करम भल,
की फल कइए विलम्बे॥
उगत जगत भरि, कर पसारि धरि,
नारि बैरि चल चन्दा।
न होएत गमन वन, संकेत निकेतन,
दोगुन बढ़ाओत दन्दा॥

अर्थ—अहाँक मुख चन्द्रमा सदृश अछि आ' केश अन्धकार सदृश ! तखन हे सजनि ! राति किऐक करैत छी ?

अहाँक हार, तरेगण सदृश शोभायमान अछि, कुच जेना निश्चल चकबा रहय (रातिमे चकवा अपन प्रियासँ विलग रहबाक कारणेँ निश्चल रहैछ)। हमरा मने त अहाँ स्वयं रजनी स्वरूपा छी।

हे सजनि ! चलू चलू (अभिसार करू) ! अहाँक भाग्य नीक अछि, (व्यर्थहि) विलम्ब कैने कोन लाभ।

नारीक शत्रु चन्द्रमा चलि चुकल अछि।(ओ) अपन किरण केँ पसारि संसार भरिमे उगि जायत। फेर (चन्द्रमाक प्रकाशमे) वनक ओहि संकेत स्थल पर जायब नहि भऽ सकत (तथा मिलन आयोजनमे विघटनक कारणेँ) द्वन्द्व द्विगुण बढ़ि जायत।

करह विभुषने, दूषन तनु जनु,
के जन जग नहि जाने।
रुचि लागि चाँद, कला न उपेपए,
साँझ छाड़ि किछु आने॥
भनइ चतुरभुज, सुमरिए माधव,
चल सखि तोरित सयानो।
सहस जनम पुन, परिनत तुअ गुन,
परसन सारंग पानी॥

भा० गी० सं०, पद संख्या १४४।

शरीर कें आभूषण धारण कए दूषित नहि करू (एहिमे व्यर्थक बिलम्बो हैत।) संसारमे कोन व्यक्ति नहि जनैछ (जे नैसर्गिक सौन्दर्य सर्वोपरि होइछ।)

अपन इच्छाक लेल (अर्थात् प्रसाधनक लोभें केओ चन्द्रमाक कलाक उपेक्षा नहि करैछ। सन्ध्याकें छोड़ि (अर्थात् चन्द्रोदय भऽ गेला उत्तर) किछु दोसरे स्थिति भऽ जैत (आ'फेर गुन मिलन सम्भव नहि हैत।)

चतुर चतुर्भुज कहैत छथि—माधवकें स्मरण कय, हे सयानि ! अहाँ शीघ्र प्रस्थान कऽ दिअ। अहाँक सहस्र जन्मक पुण्य (एहि सम्भावित मिलनक रूपमे) परिणत भेल अछि। अहांक गुणक कारणें सारङ्गपाणि श्रीकृष्ण प्रसन्न छथि।

१२

अधिक अरुण रुचि रवि छवि गेला।
बिनु घने गगन तिरोहित भेला॥
पसरल तिमिर सुधानिधि झाँपे।
अधिक नखत गन अनुषन काँपे॥
कहह कलावति तोहर समाजे।
परातहि देखिअ असम्भव आजे॥
तिलफुल पवने मधुरि दल डोले।
निचल मलिन मुख चकेवा जोरे॥
उगल कनक गिरि नव ससि पाँती।
मुदल निलोपल नहि धर काँती॥

अर्थ—(प्रभात भेला उत्तर विलासिनी नायिकाक रूप चित्रण) अत्यधिक रक्ताभ सूर्य, (सदृश नायिकाक जे सिन्दूरक ठोप छल) तकर सौन्दर्य चल गेल। (जेना) बिनु मेघहि ओ आकाशमे अस्त भऽ गेल हो। (केश रूपी) पसरल (छितिराएल) अन्धकार (मुखरूपी !) चन्द्रमाकेँ झाँपि रहल अछि। (स्वेदबिन्दु रूपी) अनेक तारागण (शारीरिक पुलक सँ) निरन्तर कम्पायमान अछि। (दूतीक उक्ति) हे कलावती ! तोरा सँग आइ प्रातहि ई असम्भव रूप किएक ? तिलफूल (नाक) क पवन (निश्वास) सँ मधुरी दल (उभय ओष्ठ) दोलायमान अछि। (स्तन रूपी) चकबाक जोरी निश्चल भेल मलिन मुख अछि। (भोरमे त चकबा-चकवीक मिलन होइछ, फेर दुनू उदास किएक ?) कनक गिरि (उरोज) पर (नख क्षतक रूपमे) द्वितियाक चन्द्रमाक पाँती उगल अछि। (तँ रात्रिक आगमन बुझि) संकुचित (मदालस) नीलकमल (नेत्र) अपन कान्ति नहि धारण करैछ अर्थात् प्रफुल्लित नहि होइछ।

भनइ चतुरभुज कोमल काया ।
अवश विलासिनि मनसिज माया ॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या-१४५ ।

(से, मलिन सिन्दूर बिन्दु,छितराएल केश राशि, शरीर पर कम्पायमान स्वेद बिन्दु, दीर्घं निश्वास, कम्पित अधर, नत पयोधर, ओहि पर नख क्षतक चिह्न, निद्रालस नेत्र आदिकेँ देखि, दूतीक शब्द मे) चतुरभुज कहैत छथि जे ई कोमल काया वाली नायिका अवश्य विलासिनी थिकीह, ई (सभ) कामदेवक माया थीक ।

१३

अवनत न कर रे धनि आनन चन्दा।
लोचन जुगल रे मोर होअओ सानन्दा॥
न कर न कर रे धनि अपद रोसे।
कहह मानिनि रे मोर किदहु दोसे॥
अधर कोमल रे नव पल्लव भासे।
मलिन न कर रे खर तर निसासे॥
विरह दहन रे दह देह कराला।
देह हुतासन रे जनि मालति माला॥
चतुर चतुरभुज रे भन निज गेआने।
सुन कलामति रे पिया बिनाए माने॥

—रागभजन संग्रह पद संख्या—५।

अर्थ—हे धन्या ! (अपन) मुखचन्द्रकेँ नीचा नहि झुकाउ। हमर दुनू आँखि (ओकर दर्शन कए) आनन्दित होअओ। हे धन्या ! असमयमे क्रोध नहि करू, नहि करू। हे मानिनि ! कहू जे हमर अपराध की अछि ? की अछि ? अहाँक कोमल अधर, नव पल्लव सदृश भासमान अछि। ताहि केँ अपन तीक्ष्णतर निश्वास सँ मलिन नहि करू। विरहक ज्वाला सँ (हमर) शरीर भीषण रूपेँ जरि रहल अछि, लगैछ जेना मालतीक माला सेहो दाह दैत हो। चतुर चतुरभुज अपन ज्ञानक अनुरूप कहैत छथि—हे कलामति ! प्रियतमक विनयकेँ स्वीकार करू।

१४

रजनि जनिया अवसान ।
धरिअ राधा रोकव विदाए मागे कान्ह ॥
निरबधि दिआँ तारे गाढ़ आलिंगने ।
वदन चाहिआँ कत करियाँ चुम्बने ॥
करओ निदेश राधे जइता निज वाशे ।
राषओ अमार मन तुमी आपनारो पाशे ॥
पिरित रतन दुइ अपरुव धने ।
राषितेँ न पारी जदि जाने आन जने ।
कहिते न पारे राधा हेन मन वाशे ।
चारि पहर दिन कान्ह चिर परवाशे ॥
चतुर चतुरभुज हेन प्रेम भाने ।
विरह दिवस जाहि कलप शमाने ॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या ११२।

परिशिष्ट

१५

बसु विस पावे हरल पिआ मोर ।
अन्ध तनय प्रिय सेओ भेल थोर ॥
जिव सएँ[१] पंचम से तनु जार ।
मधुरिपु मलय पवन थिक[२] मार ॥
पहिलुक दोसर आइति गेल ।
आदिक तेसर अनाएत भेल ॥
सूर[३] प्रिया सुत तन्हिकर तात ।
दिने दिने खइते खिन भेल गात ॥
अब[४] जाएत जिव पातक तोहि ।
बड़ कए मदने हनब जिव मोहि ॥
भनइ विद्यापति सुन वरनारि ।
चतुर चतुरभुज मिलित[५] मुरारि ॥

—न० गु० (प्रहेलिका)—२०, भा० गी० सं० (विद्यापतिक भणिता सँ पाठभेद युक्त) पद सं० ५२ ।

पाठभेद—

न० गु० (विद्यापति-पदावली, वैष्णव महाजन पदावली, द्वितीय खण्ड—पृ० २४६), —१. सञो । २. पिक । ३. सुर । ४. आबे । ५. मिलत ।

१६

शीतल सौरभ मलयज पंक।
पिआ विसलेखे सेहओ भेल वंक॥
अवला बधि शशि की फल साध।
मरम मार जनु बिनु अपराध॥
पवन शमन सन अनुखन ताप।
कीदहु परिणत पुरुवक पाप॥
नृप जगजोति वंशमणि गाव।
चतुर चतुरभुज जुगुति बुझाव॥

—राग भजन, पद सं० २३।

१७

तोँहे सखि लेहे कंगनमा ओ लेथु हरवा रे।
दुहुँ मिलि देह मनाएक अपन ओसरवा रे॥
आज आओत पिआ पाहोन चिर परवसिआ रे।
आन पिसान कैसन होएत ओ बड़ रसिआ रे॥
पिसए बैसलि वर कामिनि चौदिसि झाँपए रे।
गुन गबइतेँ सर गदगद करतल काँपए रे॥

—भा० गी० सं०, पद संख्या १३१।

विशेष—प्रस्तुत १७ संख्यक गीतमे भणिताक पंक्ति नहिदेल गेल अछि। मुदा भा०गी० सं० क १३२ संख्यक पद (एहि संग्रहक संख्या–७)क सङ्ग एहि गीतक जे बिषयगत समता ओ छान्दिक एकरूपता अछि ताहि सँ एकरा चतुर्भुजेक रचना हैबाक सम्भावना अछि। दुनू गीत उक्त संग्रहमे क्रमिक अछि। बहुत सम्भव जे ई गीत, १३२ संख्यक गीतक आरम्भिक अंश हो जकरा भ्रान्तिवश वा जानि बूझिकऽ संग्रह कर्त्ता दू गोट स्वतन्त्र गीतक रूपमे संकलित कैने होथि।

भाषा-गीत-संग्रह

(विशेष विवरण)

भाषा-गीत-संग्रह—राष्ट्रीय पुस्तकालय पाण्डुलिपि, क्रमाङ्क ६९६१।

लिपि—	तिरहुता।
पत्र—	कुल ५५। एहिमे पहिल पत्रमे एके पीठ पर लिखल अछि। तहिना अन्तिम पचपनम पीठ पर सेहो एकहि पीठ पर। अवशिष्ट ५३ पत्रमे दून्नू पीठ पर लेख अछि। अतः सभटा मिला कऽ १०८ टा लिखल पृष्ठ छैक।
आकार—	९" × २½" ।
पंक्ति—	तृतीय पत्र मे ६ पंक्ति छैक तथा अवशिष्ट प्रत्येक पत्र मे ५-५ पंक्ति।
कागत—	नेपाली।
लेखक—	लेखकक नामक स्थानमे अभिलेखालयक पुस्तक सूचीमे गोविन्द लिखल अछि। मुदा ई भ्रान्ति सम्भवतः अन्तिम गीतमे गोविन्द कविक भणिता देखि भेल हो त आश्चर्य नहि।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. भाषा-गीत-संग्रह—(हस्तलेख)।

२. राग-भजन-संग्रह—(हस्तलेख)।

३. रागतरंगिणी, सं० राज पण्डित बलदेब मिश्र, दरभंगा १९३४।

४. विद्यापति गोष्ठी (हिन्दी संस्करण), डा० सुकुमार सेन, लहेरियासराय, १९६६।

५. विद्यापति-पदावली, भाग—१, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, १९६१।

६. विद्यापति विशुद्द पदावली, मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा।

७. विद्यापति-पदावली, सं० नगेन्द्रनाथ गुप्त, प्रकाशक बसुमती साहित्य मन्दिर, कलकत्ता।

८. मैथिली गीत रत्नावली, द्वि० सं०, दरभंगा २०१८।

९. ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, जिल्द—१, डा० जयकान्त मिश्र, प्रयाग १९४९।

१०. मेडिएभल नेपाल, खण्ड—२, डी० आर० रेग्मी, कलकत्ता १९५५।